विचार बिन्दु

विनम्रता की परीक्षा समृद्धि में और स्वाभिमान की परीक्षा अभाव में होती है।
–आदित्य चौधरी

डॉक्टर भगवान न सही, इन्सान तो हैं ही

हमारी सरकारों ने शिक्षा के स्तर को पूर्णतः नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है और अब चिकित्सा व्यवस्था को भी पूर्णतः भ्रष्ट करने का प्रयास चल रहा है। सरकारी शिक्षा संस्थाओं की स्थिति सर्वविदित है। सरकारी स्कूलों की हालत और उनकी गुणात्मकता इतनी कम आँकी जाती है कि कारीगर, मजदूर, छोटे किसान और घरेलू काम करने वाले सेवक-सेविकाएँ भी यथा सामर्थ्य सरकारी स्कूलों में अपने बच्चे को नहीं पढ़ाना चाहते। यू.पी. की एक कोर्ट ने शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिये सुझाव दिया कि सबसे पहले जनप्रतिनिधि, सरकारी अधिकारियों, कर्मचारियों के बच्चों हेतु सरकारी स्कूलों में ही पढ़ना अनिवार्य किया जाय। इस सुझाव पर सरकारों ने कोई ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उन्हें मालूम है कि सरकारी स्कूलों में अध्ययन-अध्यापन का स्तर अत्यंत निम्न स्तर का होता जा रहा है। उसके कारणों और निवारण हेतु सरकार का कोई ध्यान नहीं है और न कोई रूचि ही, इसका कारण भी स्पष्ट है। राजनेता अपनी मानव श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहते हैं। वे इसे राजनीतिक स्वार्थ, दलीय व व्यक्तिगत स्वार्थ, वोट बैंक, सत्ता व समृद्धि प्राप्ति में बाधक मानते हैं। उनके प्रत्येक निर्णय पर राजनीतिक दखल और वर्चस्व की प्रवृत्ति ही प्रधान होती है, जन कल्याण की प्रवृत्ति नहीं।

चारों ओर निजी संस्थाओं की बाढ़, उनमें संख्या वृद्धि के साथ सरकारी स्कूलों में प्रवेशार्थियों की संख्या घटती जा रही है। शिक्षा के अधिकार के साथ सरकारी स्कूलों, संस्थाओं में सुधार के बजाय उन्होंने कुछ प्रतिशत प्रवेश निजी स्कूलों में भी करने का कानून बना दिया एवं उनका शुल्क सरकार द्वारा वहन करने का भी प्रावधान दिया। सरकार ने सरकारी स्कूलों में सुधार का कोई प्रयास नहीं किया। अस्तु।

हाल ही में राज्य सरकार ने 'स्वास्थ्य का अधिकार' का कानून भी बना दिया। सरकारी चिकित्सालयों की जो दुर्दशा है वह किसी से छिपी नहीं है। लेखक सरकारी अस्पताल में जाना पसंद करता है, हालांकि राजस्थान सरकार स्वास्थ्य योजना के अन्तर्गत और सरकारी पेन्शनर होने के नाते वह अन्य अधिकृत निजी हॉस्पिटल में भी जा सकता है। सरकारी हॉस्पिटल में रोगी मारे-मारे फिरते हैं। भीड़ की कतारें, एक खिड़की से दूसरी खिड़की पर भटकना, एक चिकित्सक से दूसरे चिकित्सक को खोजना, उपचार, जाँच व औषधि प्राप्ति हेतु सारा दिन बरबाद होता है और उसके उपरान्त भी अधूरा इलाज व अधूरी औषधि मिल पाना आम बात है। प्रामाणिक औषधियों की प्राप्ति चाहे वह हॉस्पिटल से हो या सरकारी भंडार से, संदेह से परे नहीं होती।

डॉक्टरों एवं नर्सिंग स्टाफ पर इतना बोझ रहता है कि वे चाह कर भी पर्याप्त समय, सुविधा व संतोष रोगी को नहीं दे पाते। इस स्थिति को सुधारने के लिये रोगियों को पहले प्राथमिक/सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर जाना व बड़े अस्पतालों को रेफरल हॉस्पिटल रखना एक उचित कदम होता। परंतु सस्ती लोकप्रियता हेतु राजनेता ऐसा नहीं करते, परिणाम स्वरूप इधर चिकित्सक व नर्सिंग स्टाफ का स्वभाव भी चिड़चिड़ा हो जाता है। दूसरी ओर राजनीतिक दखल के कारण कई नागरिकों द्वारा डॉक्टरों व नर्सिंग स्टाफ के साथ दुर्व्यवहार की घटनाएँ आम बात हो गई हैं। सुरक्षा हेतु हड़ताल, धरना, प्रदर्शन होते रहते हैं। नागरिकों द्वारा मारपीट भी की जाती है। जो डॉक्टर उपचार हेतु भगवान माना जाता है वह इंसान भी नहीं गिना जाता।

डॉक्टरों की पढ़ाई हेतु एक व्यक्ति को कठिनतम परिश्रम से गुजरना होता है। ज्यादातर सर्वश्रेष्ठ छात्र ही प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर पाते हैं। घर पर और कोचिंग सेन्टर पर खूब व्यय होता है। प्रवेश हो जाने पर उनकी अध्ययन व्यवस्था हेतु सरकार के पास पर्याप्त भवन, स्टाफ व अन्य आवश्यक सुविधाएँ नहीं होती, उनके होस्टल व मैस में घोर अस्वच्छता और अव्यवस्था है। राजस्थान में एम.बी.बी.एस. उत्तीर्ण करने के बाद प्रशिक्षु को देश में सबसे कम भत्ता रू. 7000/- मिलता था जो आंदोलन के बाद हाल ही बढ़ाया गया है।

सुपर स्पेशलिस्ट तक पहुँचने के लिये एम.बी.बी.एस. के बाद पी.जी. (पोस्ट ग्रेजुएट) परीक्षा हेतु अखण्ड तप व परिश्रम करना होता है। कम प्रतिशत ही पी.जी. कर पाते हैं। इसके बाद सुपर स्पेशलिटी हेतु फिर घोर परिश्रम करना होता है। पी.जी. और पोस्ट पी.जी. करते समय 24 घंटे काम करते हैं। सारा काम उनके भरोसे चलता है। इतना परिश्रम किसी भी अन्य करियर (भविष्य व्यवसाय) हेतु नहीं करना पड़ता। उसके उपरान्त गाँव-गाँव, नगर-नगर की नियुक्ति में खाक फाँकनी पड़ती है।

डॉक्टर को भगवान मानने वाले इस देश में डॉक्टर के परिश्रम, त्याग, बलिदान का कभी सही मूल्यांकन नहीं किया गया। क्या हमें ज्ञात नहीं कि कोरोना की अवधि में चिकित्सकों व नर्सिंग कर्मियों के परिश्रम पूर्वक सेवा व अपने प्राणों की परवाह न कर इन वीर योद्धाओं ने कोरोना को परास्त किया।

सरकारी शिक्षा व चिकित्सा व्यवस्था की असफलताओं के कारण ही निजी शिक्षण व चिकित्सा संस्थाओं को प्रोत्साहन मिलता है। इनमें जो भ्रष्टाचार की संभावना रहती है उसका कारण भी भ्रष्ट राजनेता व अधिकारी हैं। वे इनसे चौथ वसूली की अपेक्षा रखते ही हैं। यह भी सच है कि निजी संस्थाओं को अपना स्तर बनाये रखने के लिये अपने साधन जुटाने होते हैं। निश्चय ही वहाँ का व्यय अधिक रहा है, रहता है और रहेगा। प्रश्न यह है कि यदि सरकारी संस्था सफल है तो रोगी निजी में जाये ही क्यों? निजी संस्थाओं में लोग जाते ही अपनी इच्छा से हैं, क्योंकि वहाँ उन्हें व्यय के उपरान्त भी सुविधा लगती है। आर.जी.एस.एस. के अन्तर्गत इन निजी चिकित्सा संस्थाओं में भी सरकार रोगियों की मुफ्त चिकित्सा चाहती है। आपात स्थिति में आने वाले हर रोगी का इलाज हो,,वह व्यय नहीं दे सकता तो मुफ्त हो और सरकार उसका पुनर्भरण करेगी। सरकार के पास पैसा है नहीं और इन चिकित्सा संस्थाओं व सहकारी समितियों की करोड़ों की राशि बकाया रहती है। यह फिर कई प्रकार के अन्य अनुचित साधनों को जन्म देता है। सुपर स्पेशलिस्ट के पास चाहे-अनचाहे, आवश्यक अनावश्यक लोगों की भीड़ पहुँचेगी तो वही दुर्दशा निजी अस्पतालों की भी होगी जैसी सरकारी अस्पतालों की है। एक बिन्दु और है सुप्रीम कोर्ट का वकील एक राय देने के दो लाख रुपये लेता है और पूरे मुकदमे के पचास लाख। एक सुपर स्पेशलिस्ट चिकित्सक यदि 500, 1500 या 5000 रू. फीस लेता है, जीवन खपाने के बाद, 70-80 वर्ष का हो जाने पर भी तो दर्द क्यों! क्या वह भगवान नहीं तो इन्सान भी नहीं है? कोचिंग सेन्टर में भी लाखों की फीस है उन पर रोक क्यों नहीं? यही हाल निजी प्रतिष्ठित स्कूलों, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय का है।

मुद्दा जन कल्याण की इच्छा का नहीं है, मुद्दा है वोट बटोरने का, सस्ती लोकप्रियता का, सत्ता व स्वर्ण की पिपासा का। क्या एक राजनीतिक दल, एक व्यक्ति ने सत्ता में रहने का पट्टा लिया हुआ है कि वह येन केन प्रकारेण अपने स्वार्थ हेतु सारी संस्थाएँ भ्रष्ट कर दे?

क्या ग्रामीण अंचल के हॉस्पिटल, उसके चिकित्सक तथा सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के अथवा क्षेत्र, देश, विदेश के प्रख्यात डॉक्टरों से व्यवहार व उपचार में कोई अंतर नहीं होगा।

केन्द्र व राज्य सरकारों ने धर्म के आधार पर और अल्पसंख्यक तुष्टीकरण के आधार पर सारा देश खण्ड-खण्ड करने का प्रयास किया है। आज जब केन्द्र सरकार 'सबका साथ, सबका विकास' पर काम करना चाहती है तो राज्य सरकारें शिक्षा व शिक्षक की दुर्दशा कर चुकी हैं उसे 'बेचारा' बना चुकी है। राज्य सरकारें नहीं समझना चाहती कि ''सचिव, वैद्य, गुरू' तीनी जो प्रिय बोलहें भय आस, राज, धर्म, तन, तीनि को होहि नास''। अधिकांश राजनेता व अधिकारी भ्रष्ट हो चुके, सचिव चापलूसी में लग गये, गुरू के ब्रह्मा, विष्णु, महेश होने के बजाय, चयन नियुक्ति स्थानान्तर के नाम पर वह निरीह हो गया। रहा 'चिकित्सक भगवान' उसके मान मर्दन की तैयारी है।

निजी चिकित्सकों, हॉस्पिटल आदि की हड़ताल चल रही है। सरकारी अस्पताल व उनके चिकित्सक भी समर्थन में हैं। शांति मार्च पर लाठियाँ बरसाई जा गई हैं। हठधर्मिता क्यों? क्या यह लोकतंत्र है? क्या एमरजेन्सी को परिभाषित नहीं किया जा सकता? क्या संवाद के माध्यम से समस्याओं को सुलझाया नहीं जा सकता? राइट टू हेल्थ लागू हो परंतु अव्यवस्था की नींव पर नहीं, व्यवस्था की कब्र पर नहीं। व्यवस्था, अनुशासन जन कल्याण आदि के दृष्टिमत ही राइट टू हेल्थ लागू हो। क्या सरकार समझेगी?

बड़े भाई की प्रबल इच्छा के कारण लेखक स्वयं डॉक्टर बनना चाहता था, परंतु अंक प्रतिशत कम होने से प्रवेश नहीं मिल पाया। लेखक की दूसरी व तीसरी पीढ़ी ने मिलाकर 8 व भाईयों के परिवार से 5 डॉक्टर याने कुल 13 डॉक्टर परिवार ने समाज को दिये हैं। आशय यह कि ज्यादा से ज्यादा बच्चे डॉक्टर बनना चाहते थे, परंतु सर्वेक्षण के अनुसार पूर्व केन्द्रीय सत्ताओं एवं राज्यों की चिकित्सा रीति-नीति में डॉक्टरों की निरंतर उपेक्षा के कारण रूचि का प्रतिशत बहुत कम हुआ है। इसका प्रधान कारण यही है कि डॉक्टर को भगवान मानने वाले इस देश में डॉक्टर के परिश्रम, त्याग, बलिदान का कभी सही मूल्यांकन नहीं किया गया। क्या हमें ज्ञात नहीं कि कोरोना की अवधि में चिकित्सकों व नर्सिंग कर्मियों के परिश्रम पूर्वक सेवा व अपने प्राणों की परवाह न कर इन वीर योद्धाओं ने कोरोना को परास्त किया। सैकड़ों ही नहीं हज़ारों चिकित्सकों व नर्सिंग कर्मियों ने घर व बाहर तिरिस्कार सह कर भी अपने प्राणों का बलिदान किया। डॉक्टर को भगवान नहीं तो इन्सान तो समझिये अन्यथा समाज डॉक्टरों सेवा से वंचित रहेगा।

–अतिथि सम्पादक,
कैलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

भाजपा क्या डॉ. सतीश पूनिया को मजबूत करेगी?

रामगोपाल जाट

भाजपा ने चार राज्यों के प्रदेशाध्यक्ष बदले हैं। इनमें राजस्थान का अध्यक्ष बदलना सबसे अहम है, क्योंकि 6 महीने बाद भाजपा यहां पर चुनाव में जा रही है। राज्य में नवंबर-दिसंबर में चुनाव होंगे और उससे पहले भाजपा ने अपना प्रदेशाध्यक्ष बदलकर एक बड़ा दांव खेला है। सामान्य तौर पर माना तो यह जा रहा है कि भाजपा ने वसुंधरा राजे से गुटबाजी रोकने के लिये डॉ. सतीश पूनियां की जगह सीपी जोशी को अध्यक्ष बनाया गया है। हालांकि, जो लोग इस बात से सहमत हैं, वो इस बात का शायद ही जवाब दें कि यही गुटबाजी बीते साढ़े तीन साल से जारी थी, तब अध्यक्ष क्यों नहीं बदला गया?

कुछ सियासी लोग यह भी दावा कर रहे हैं कि पिछले दिनों हुई ब्राह्मण महापंचायत के दबाव में आकर भाजपा ने ब्राह्मण चेहरे को अध्यक्ष बनाया है। ये ही लोग इस बात का जवाब नहीं देंगे कि पिछले दिनों ही जाट महाकुंभ में मांग करने से क्या जाट सीएम बनाया गया? ये वो लोग हैं, जो सोशल मीडिया पर राजनीति को केवल सुनते हैं, वहीं पढ़ते हैं और बिना दिमाग का इस्तेमाल किए लिख देते हैं या सार्वजनिक तौर पर बोल देते हैं। इस तरह के लोगों का राजनीति में गहरी समझ से कोई वास्ता नहीं है।

यह चर्चा आम रही है कि वसुंधरा राजे कभी भी सतीश पूनियां को फूटी आंख नहीं सुहाती हैं, लेकिन वसुंधरा की मर्जी के खिलाफ पार्टी आलाकमान ने सतीश पूनियां को अध्यक्ष बनाया तब क्या वसुंधरा ने विरोध नहीं किया होगा? क्या उसके बाद साढ़े तीन साल में भी विरोध नहीं किया? आखिर अब ही ऐसी क्या मजबूरी आई कि वसुंधरा राजे से गुटबाजी के कारण राजस्थान में अध्यक्ष बदल दिया गया? यह सवाल जरूर अनुत्तिरत है कि जब सतीश पूनियां को अध्यक्ष पद पर पार्टी ने एक्सटेंशन दे दिया था, तो इस तरह से बीच अचानक से सीपी जोशी को क्यों लाया गया है? इसका जवाब पार्टी की टॉप लीडरशिप के अलावा किसी को पता नहीं है। यहां तक कि भाजपा राजस्थान के विधायकों और अध्यक्ष रहे सतीश पूनियां को छोड़कर संगठन में बैठे लोगों के पास भी इसका जवाब नहीं होगा।

पिछले दिनों भाजपा ने राज्यसभा सांसदों के लिये दो कार्यकाल भी निर्धारित किए हैं। जो नेता बरसों से राज्यसभा में बिना मेहनत किए पार्टी के सहारे निर्वाचित होते रहे हैं और जनता से दूर रहते हैं, उनको भी अब लोकसभा चुनाव या फिर संबंधित राज्य में विधानसभा चुनाव लड़ना होगा। इसी तरह की तैयारी लोकसभा सदस्यों के लिए भी की जा रही है, किंतु अभी इसपर निर्णय नहीं लिया गया है। इसको लोकसभा सदस्य की क्षेत्र में लोकप्रियता से जोड़कर देखा जा रहा है। फिर भी इस बात की संभावना है कि लोकसभा वालों पर भी लगातार चुनाव लड़ने से रोकने के लिये किसी तरह का निर्णय लिया जा सकता है। भाजपा ने इसको नई पीढ़ी को आगे बढ़ाने के तौर पर प्रचारित किया है। इसका यह भी मतलब हो सकता है कि 58 वर्ष के सतीश पूनियां के बजाए 11 साल छोटे 47 वर्षीय के सीपी जोशी को अध्यक्ष बनाकर वसुंधरा राजे गुट को साफ संकेत भी दिये गये हैं कि पार्टी युवाओं को आगे लाने का प्रयास कर रही है।

संगठन में लंबे अनुभव के हिसाब से सतीश पूनियां को केंद्र में जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है या फिर उनके लिए पार्टी ने कुछ ऐसा सोचा हो कि आने वाले समय में कहीं पर उनके अनुभव को काम लिया जा सके। वर्तमान में राज्य में सतीश पूनियां के लिए दो ही जगह बची हैं, जहां उनका जिम्मेदारी दी जा सकती है। पहला पद है नेता प्रतिपक्ष का, जहां से हटाकर कुछ समय पहले ही गुलाबचंद कटारिया असम का राज्यपाल बनाया गया है। इस जगह पर सबसे पहला दावा तो उपनेता के नाते राजेंद्र राठौड़ का बनता है, लेकिन अब सतीश पूनियां का नाम भी तेजी से लिया जा रहा है। राजेंद्र राठौड़ ने पार्टी के अंदरखाने एलओपी पर अपना दावा ठोक दिया है।

दूसरा पद है चुनाव अभियान समिति का संयोजक। इस पद को लेकर अध्यक्ष के पद की भांति ही वसुंधरा राजे भी ताकत लगा रही होंगी। चुनाव नजदीक आने के साथ ही चुनाव समिति संयोजक का पद भी राज्य में तीन टॉप पदों में से एक हो जाएगा। पिछले लोकसभा चुनाव से ठीक पहले सतीश पूनियां को सदस्यता अभियान समिति का संयोजक बनाया गया था। उस सफलता को देखते हुए कुछ समय बाद ही उनको अध्यक्ष बनाया गया था। इस बात की सबसे अधिक संभावना है कि सतीश पूनियां को चुनाव समिति का संयोजक बनाकर आलाकमान वसुंधरा राजे को संकेत दे सकता है कि उनको पार्टी के अनुसार चलना होगा, अब पार्टी उनके अनुसार नहीं चलेगी। यदि इस पद पर सतीश पूनियां को बिठाया जाता है तो फिर राज्य में अध्यक्ष, प्रभारी, संगठन महासचिव और चुनाव समिति का संयोजक चुनाव के दौरान सबसे पॉवरफुल होंगे, जो राज्य के अधिकांश टिकटों का निर्धारण करेंगे।

यह बात सबको पता है कि सतीश पूनियां का कार्यकाल दिसंबर में पूरा हो चुका था। इस हिसाब से वह तो पहले ही एक्सटेंशन पर चल रहे थे। इसलिये उनको हटाया जाना शब्द लिखना तकनीति रुप से गलत है। यह कह सकते हैं कि भाजपा ने प्रदेश का अध्यक्ष बदला है। हटाया जाना शब्द तभी लिखा जा सकता है कि जब किसी को हटाया गया हो और उसके स्थान रिक्त हो या कार्यकाल के बीच में ही दूसरा अध्यक्ष बना दिया गया हो।

अब सतीश पूनियां की चुनाव अभियान समिति संयोजक की संभावना सर्वाधिक है, लेकिन इस पद पर उनको नहीं लगाया जाता है तो फिर केंद्र में जनरल सेक्रेटरी जैसी कोई जिम्मेदारी दी जा सकती है। संगठन में सतीश पूनियां को बहुत लंबा अनुभव हो चुका है, जिसके कारण पार्टी उनके अनुभव का फायदा लेना चाहेगी। दूसरी बात यह है कि राज्य की सबसे बड़ी आबादी की नाराजगी से बचने के लिये भी पार्टी सतीश पूनियां को किसी पद पर रखना चाहेगी। राज्य में अभी चुनाव भी करीब 6 से 8 महीने बाद हैं, लेकिन सब गुटों द्वारा अपने अपने नेता को सीएम का चेहरा बनाया जा रहा है। पूर्व सीएम वसुंधरा राजे के समर्थक अब जरूर कमजोर पड़ते नजर आ रहे हैं, क्योंकि दो-दो बार उनकी पंसद के खिलाफ जाकर अध्यक्ष बनाये गये हैं। 2003 में उनको राजस्थान भेजा गया था, तब से लेकर 2018 के चुनाव तक वसुंधरा ही भाजपा और भाजपा ही वसुंधरा हुआ करती थीं, लेकिन माना जाता है कि सबसे पहले 2019 में सतीश पूनियां को अध्यक्ष बनाकर वसुंधरा राजे को कमजोर किया गया। इसके बाद वसुंधरा की तमाम नाराजगी को दरकिनार कर पूरे साढ़े तीन साल सतीश पूनियां ने संगठन को अपने हिसाब से रिडिजाइन किया, जिसमें वसुंधरा गुट के लोगों को जगह नहीं दी गई।

–रामगोपाल जाट,
वरिष्ठ पत्रकार

100 साल से अधिक पुरानी हेरिटेज नैरो गेज ट्रेन अब इतिहास बन जाएगी

धौलपुर (निस)। धौलपुर जिले के सैकड़ों गांव की लाइफ लाइन मानी जाने वाली नैरो गेज ट्रेन अब इतिहास बनने जा रही है। अंग्रेजों के टाइम की 100 साल से अधिक पुरानी ये हेरिटेज ट्रेन शुरुआत में धौलपुर के प्रसिद्ध लाल पत्थर की ढुलाई के लिए शुरू की गई थी, बाद में यह सवारी गाड़ी बन गई। और धीरे-धीरे यह सैकड़ों गांव के हजारों लोगों की लाइफ लाइन बनती चली गई। वर्तमान में लोग बाजार और अन्य गांव में आने जाने के लिए इस ट्रेन का उपयोग करते हैं। यहां तक कि लोग घर गृहस्ती का सामान और खेतों से पशुओं का चारा भी इसी ट्रेन से लेकर आते हैं। धौलपुर से बाड़ी व सरमथुरा होकर उत्तर प्रदेश के तांतपुर तक जाने वाली इस नैरो गेज ट्रेन को अब ब्रांड गेज में परिवर्तित किया जा रहा है। इसीलिए इसे 31 मार्च यानि आज से बंद किया जा रहा है। बंद करने के आदेश 2 दिन पूर्व जारी किए जा चुके हैं।

ऐसे में आज ट्रेन का अंतिम दिन था। जिसको लेकर जब रेल से सफर करने वाले स्थानीय लोगों को इसकी जानकारी हुई तो वे मायूस हो गए, क्योंकि लोगों का करीब सवा सौ वर्ष का इतिहास व रिश्ता इससे जुड़ा है। ट्रेन से यात्रा करने वाले ज्यादातर लोगों का कहना है कि उन्हें इस ट्रेन के बंद होने का काफी दुख है। लेकिन खुशी इस बात की है कि यह मार्ग अब ब्रॉडगेज में परिवर्तित होने जा रहा है। ऐसे में आगामी समय में क्षेत्र का विकास तो होगा ही, लोगों को भी दूर तक जाने का एक नया रास्ता मिलेगा। ट्रेन बंद होने पर लोगों की भावनाएं समझने के लिए की धौलपुर से बाड़ी रेलवे स्टेशन तक अधिकारियों के साथ ट्रेन में सफर किया। जिसमें आखिरी सफर के कारण जगह जगह लोग ट्रेन की वीडियो बनाते और फोटो खींचते हुए दिखे। इसके अलावा लोगों ने ट्रेन के साथ सेल्फी भी ली। वही रास्ते में लोगों ने हाथ हिलाकर जगह-जगह ट्रेन का अभिवादन भी किया। वही ट्रेन के आखिरी सफर में धौलपुर जिला कलेक्टर अनिल कुमार अग्रवाल सहित अन्य अधिकारियों ने भी यात्रा की और इसका लुफ्त उठाया।

- **ट्रेन के आखिरी सफर का आम व खास ने जमकर लुत्फ उठाया**

नैरो गेज ट्रेन का आखिरी दिन बाड़ी सहित विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर ट्रेन का स्वागत किया गया।

जानकारों की माने तो यह राजस्थान की एकमात्र नैरो गेज ट्रेन है जो अब भी चल रही थी। अब यह भी इतिहास बनने जा रही है। क्योंकि धौलपुर से करौली तक ब्रॉडगेज लाइन स्वीकृत हुई है। जिसका कार्य चल रहा है। ऐसे में अधिकारियों द्वारा अब इस ट्रेन को बंद किया जा रहा है। जिससे कार्य में गति लाई जा सके। ये ट्रेन 1917 में शुरू हुई थी। जिसे धौलपुर स्टेट टाइम में तत्कालीन धौलपुर महाराज ने शुरू किया था।

जो अंग्रेजों से इसे लेकर आए थे। जिसके पीछे बंसी पहाड़पुर के पत्थर का परिवहन मुख्य वजह था। क्योंकि बंसी पहाड़पुर में जो लाल पत्थर और सफेद पत्थर निकलता है वह बहुत ही उच्च क्वालिटी का होता है। जिसको दूरस्थ स्थानों पर ले जाने के लिए यह ट्रेन शुरू की गई थी। जिसे जनता गाड़ी नाम दिया गया। नैरो गेज ट्रेन के बंद होने पर आज आखिरी दिन बाड़ी सहित विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर ट्रेन का स्वागत किया गया। साथ में विदाई भी दी गई। इसके अलावा रेलवे के कई अधिकारी और कर्मचारियों ने भी इस ट्रेन में परिवार सहित यात्रा की और सफर का आनंद लिया। खास बात ये है कि अधिकांश अधिकारियों व कर्मचारियों की इस ट्रेन में यह यात्रा पहली व आखिरी यात्रा रही।

महावीर जी का आठ दिवसीय लक्खी मेला आज से

जयपुर/श्रीमहावीरजी। पूरे विश्व को जीओ और जीने दो का संदेश देने वाले जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर का 2622 वां जन्म कल्याणक महोत्सव (महावीर जयन्ती) पर दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी में आठ दिवसीय वार्षिक लक्खी मेला शनिवार 01 अप्रैल से शुरू होगा।

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी के अध्यक्ष सुधांशु कासलीवाल एवं मंत्री महेन्द्र कुमार पाटनी ने बताया कि शनिवार 01 अप्रैल को मेले की स्थापना होगी , रविवार को पूजन,भजन, सामूहिक आरती व शास्त्र प्रवचन होंगे। सोमवार को महावीर जयंती समारोह धूमधाम से मनाया जाएगा जिसमें प्रातः कटला प्रांगण से प्रभातफेरी निकलेगी। कटला प्रांगण में झण्डारोहण के बाद जल यात्रा निकाली जायेगी। तत्पश्चात स्कूल में मोदक वितरण, अस्पताल में मरीजों को तथा हिण्डौन जेल में केदियों को फल वितरण किये जायेंगे। मंगलवार, 04 अप्रैल को वर्धमान विधान, सामूहिक पूजा, सामूहिक आरती, शास्त्र प्रवचन के बाद दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप संगिनी फारम एवर जयपुर द्वारा कटला पूर्वी पाण्डाल में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा।इसी दिन सांस्कृतिक मंच पर रंगशाला एकेडमी इन्दौर द्वारा साधना मादावत महानाट्यय प्रस्तुति दी जाएगी। बुधवार, 05 अप्रैल को पूजन, भजन, सामूहिक आरती व शास्त्र प्रवचन के बाद रात्रि में कटला पूर्वी पाण्डाल में महिला जागृति संघ जयपुर द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा। सांस्कृतिक मंच पर वीणा कैसेट्स जयपुर द्वारा राजस्थानी लोक नृत्य व लोकगीत कार्यक्रम गोरबंद की भव्य प्रस्तुति दी जाएगी।

प्रचार प्रसार मुख्य संयोजक सुरेश सबलावत के अनुसार गुरुवार 06 अप्रैल को श्री वीर संगीत मण्डल जयपुर के सहयोग से सामूहिक पूजा की जाएगी। अपराह्न 4.00 बजे उप जिला कलेक्टर एवं प्रबंधकारिणी कमेटी के अध्यक्ष द्वारा मेला निरीक्षण किया जाएगा।

सायंकाल सामूहिक आरती के बाद श्री दिगम्बर जैन महिला महासमिति सांगानेर सम्भाग द्वारा कटला पूर्वी पाण्डाल में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी जाएगी। सांस्कृतिक मंच पर रात्रि 8.00 बजे से राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का विशाल आयोजन किया जाएगा। अध्यक्ष सुधांशु कासलीवाल एवं मंत्री महेन्द्र कुमार पाटनी ने बताया कि वार्षिक मेले की तैयारियां जोर शोर से चल रही है। मेले में जैन अजैन सभी लाखों की संख्या में श्रद्धालुगण शामिल होगें। गम्भीर नदी में मेले के लिए पाचना बांध से पानी छोड़ा जाएगा।

पांडाल, डेरा, छोलदारी व्यवस्था के चन्द्र प्रकाश जैन पहाड़ियां, विद्युत व्यवस्था के लिए प्रदीप कुमार जैन व नवीन बिल्टीवाला प्रदर्शनी व्यवस्था के लिए सुधीर कासलीवाल ,आयुष कासलीवाल व संजय जैन, सांस्कृतिक कार्यक्रम व ठाामीण खेलकूद के लिए मानद् मंत्री महेन्द्र कुमार पाटनी, कवि सम्मेलन के लिए विवेक काला, प्रकाशन व्यवस्था के लिए महेन्द्र कुमार पाटनी, भोजन व्यवस्था के लिए उमराव मल संघी तथा पूनमचंद बैनाडा, प्रचार प्रसार के लिए सुरेश सबलावत तथा विनोद जैन कोटखावदाको, स्वास्थ्य चिकित्सा के लिए रुपिन काला,डॉ ज्ञान चन्द सोगानी, आवास के लिए प्रदीप कुमार जैन, सफाई व सौन्दर्यीकरण के लिए पदम कुमार जैन, दिव्यांग एवं असमर्थ सहायता शिविर के लिए अनिल पाटनी दीवान, जल व्यवस्था के लिए अनिल दीवान एवं देवेन्द्र मोहन कासलीवाल, यातायात व सुरक्षा व्यवस्था के लिए शांति कुमार जैन, अनिल जैन एवं राजेश चौधरी को तथा वर्धमान विधान चौबीसी के लिए चन्द्र प्रकाश पहाड़ियां को जिम्मेदारी सौंपी गई है। आईटी व्यवस्था अभिषेक छाबड़ा, अशोक पाटनी, स्वयं सेवक व्यवस्था महेश काला तथा भानू कुमार छाबड़ा देखेंगे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 1 अप्रेल, 2023

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2080, अश्लेषा नक्षत्र रात्रि 4:48 तक, धृति योग रात्रि 2:43 तक, वणिज करण दिन 3:11 तक, चन्द्रमा रात्रि 4:48 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मिथुन, बुध-मेष, गुरू-मीन, शुक्र-मेष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज कामदा एकादशी है। भद्रा दिन 3:11 से रात्रि 4:20 तक रहेगी। रवियोग रात्रि 4:48 पर समाप्त होगा। लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ 7:54 से 9:27 तक, चर 12:33 से 2:04 तक, लाभ-अमृत 2:04 से 5:09 तक।

राहूकालः 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:22, सूर्यास्त 6:40

मेष
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों में प्रगति होगी।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक प्रतिष्ठा के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। मनःस्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। व्यक्गित परेशानी अभी यथावत बनी रहेगी।

कन्या
आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

वृश्चिक
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

धनु
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कुंभ
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। स्वास्थ्य से संबंधित चिन्ता दूर होगी।

मीन
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आज आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।